International Research Journal of Education and Technology

Peer Reviewed Journal, **ISSN 2581-7795**

Utility of Buddhist Viharas in Human Value Development

[1]Atar Singh, PhD Research Scholar, Samrat Ashok Subharti School of Buddhist Studies, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut-250002

[2]Dr. Seema Sharma, Associate Professor and HOD, Department of Languages, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut-250002

[3]Dr. Chandrakitti Bhante, Assistant Professor and HOD, Samrat Ashok Subharti School of Buddhist Studies, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut-250002

बौद्ध विहारों की मानव मूल्य निर्माण में उपयोगिता

अतर सिंह[1], डॉ. सीमा शर्मा[2], डॉ. चन्द्रकीती भन्ते[3]

[1] अतर सिंह, पीएचडी शोध छात्र, सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002

[2] डॉ. सीमा शर्मा, सह-आचार्या, भाषा विभाग, विभागाध्यक्ष, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002

[3] डॉ. चन्द्रकीती भन्ते, सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002

सार:

बौद्ध विहारों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भारतीय समाज में अत्यधिक गहरा रहा है। ये स्थल केवल धर्मिक साधना के केंद्र नहीं रहे, बल्कि मानवता, अहिंसा, और समानता जैसे उच्चतम मानवीय मूल्यों की शिक्षा देने के स्थान रहे हैं। बौद्ध विहारों का उद्देश्य न केवल ध्यान और साधना के माध्यम से आत्मा की शुद्धि था, बल्कि इन स्थलों ने समाज के भीतर नैतिकता, सच्चाई, प्रेम और सहिष्णुता की भावना को भी मजबूत किया। बौद्ध धर्म में शरण, दान, सद्धर्म, और संघ के सिद्धांतों पर बल दिया जाता है। इन सिद्धांतों को व्यवहार में लाकर व्यक्ति न केवल अपने आत्मा को शुद्ध करता है, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक

बदलाव लाता है। बौद्ध विहारों में रहने वाले साधुओं और उपासकों ने अहिंसा (अद्वैतता), प्रेम, करुणा, और समता के गुणों को आत्मसात किया, जिससे ये गुण समाज में फैलते गए। इन विहारों ने समाज को शांति और सद्भावना की दिशा में मार्गदर्शन दिया और विभिन्न समाजों के बीच भाईचारे को बढ़ावा दिया।

साधनाओं और शिक्षा के साथ-साथ बौद्ध विहारों में विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती थीं, जैसे कि उपदेश, वाद-विवाद, संवाद, और ध्यान सत्र। ये गतिविधियाँ समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने, समानता को बढ़ावा देने, और व्यक्तियों के बीच सामूहिक सद्भाव को प्रोत्साहित करने में सहायक रही। इसके अलावा, बौद्ध विहारों ने विभिन्न शिल्पों, कला, और साहित्य को भी प्रोत्साहित किया, जिससे न केवल धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक उन्नति भी हुई। वर्तमान समय में, बौद्ध विहारों की मानव मूल्य निर्माण में उपयोगिता बनी हुई है। आधुनिक समाज में बढ़ते हुए तनाव, हिंसा और असहिष्णुता के बीच, बौद्ध विहारों में दी जाने वाली शिक्षा और साधनाएँ समाज में शांति और सामंजस्य स्थापित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बौद्ध विहारों द्वारा प्रदान की जाने वाली मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन की शिक्षा आज भी लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रही है।

मुख्य शब्द: बौद्ध विहार, मानव मूल्य, अहिंसा, समानता, शांति, करुणा, समाजिक सुधार, बौद्ध धर्म, साधना, मानसिक शांति, समता, सांस्कृतिक उन्नति, ध्यान, बौद्ध शिक्षा

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म, जो भारत में 6वीं सदी ईसा पूर्व में भगवान बुद्ध द्वारा स्थापित किया गया, ने समाज में गहरे बदलावों की शुरुआत की। बौद्ध धर्म ने न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि मानवता, नैतिकता, और समाज सुधार के दृष्टिकोण से भी भारतीय समाज में अपनी एक विशेष जगह बनाई। बौद्ध विहारों का निर्माण बौद्ध धर्म के प्रचार और पालन के लिए किया गया था। ये स्थल न केवल धार्मिक साधना का केंद्र बने, बल्कि इन स्थानों

ने समाज में मानव मूल्यों के प्रचार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भगवान बुद्ध ने ध्यान, तपस्या और धर्म के पालन से आत्मज्ञान और मुक्ति का मार्ग सुझाया, जिसे बौद्ध विहारों में साधना और ध्यान के माध्यम से हासिल किया जाता था।

बौद्ध विहारों का इतिहास और धार्मिक महत्व इसलिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इन स्थलों ने न केवल अपने अनुयायियों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन दिया, बल्कि सामाजिक समानता, अहिंसा, करुणा, और प्रेम जैसे उच्च मानवीय गुणों का प्रचार भी किया। इन विहारों में साधक न केवल ध्यान और साधना करते थे, बल्कि समाज के लिए अपनी जिम्मेदारी और दायित्व का भी निर्वहन करते थे। इस शोध पत्र में बौद्ध विहारों के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व पर चर्चा की जाएगी और यह समझने की कोशिश की जाएगी कि इन स्थलों ने मानव मूल्य निर्माण में कैसे योगदान दिया।

1. बौद्ध विहार शिक्षा और संस्कार की केन्द्र माने गये हैं।
2. यह भारत की प्राचीन संस्कृति है।
3. कला विज्ञान और स्थापत्य आदि भारत की प्राचीन धरोहर हैं।
4. बौद्ध विहारों का नैतिक मूल्यों को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान है।
5. बौद्ध विहारों को मानव मूल्य के संरक्षण के रूप में देखा जा सकता है जो यू जीवन को प्रेरित करते है।
6. बौद्ध विहार विपश्यना के केन्द्र होते हैं।
7. बौद्ध विहार मन और शरीर को शुद्ध रखने के लिए अंर्तभावना के केन्द्र हैं।
8. बौद्ध विहार करूणा और मैत्री भावना को अभ्यास द्वारा विकसित करने के आगार हैं ।
9. बौद्ध विहार मानव की भलाई के लिए बुरे कार्यों को त्यागने तथा कुशल कर्म करने का अभ्यास एवं व्यवहार में लाने के केन्द्र हैं ।

10. मानवता, मनुष्य के जीवन का आधार है, इसमें परोपकार, दया, दान, मैत्री, करुणा, उदारता, सहानुभूति, त्याग, सहिष्णुता, संतोष, साहस, तत्परता, निष्ठा, प्रेम, सहभागिता निर्मलता, शुद्धचित जो मानव के लिए आवश्यक है बौद्ध विहार में बताये जाते हैं ।
11. मानव को सुखी बनाने की दृष्टि से उपयोगी हैं ।
12. विश्व की भ्रमण यात्राओं में बौद्ध विहार की विशेष भूमिका है।
13. आज बौद्ध विहार, विहार से महाविहार महाविद्यालय विश्वविद्यालय के शिक्षा मान्य रहे हैं जिसमें अतीत के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक सभ्यता एवं कला का अनुभव कराते हैं।
14. आज बौद्ध विहार सभ्यता के लिए जिसने विश्व में नैतिक और अनुशासन जो विनय पिटक में मिलता है इन साहित्यिक विचारों को विश्व स्तर पर अपनाया जा रहा है।
15. बौद्ध विहार समाज को जोड़ने वाला स्थान हैं, बौद्ध विहार समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय के विचार का प्रचार-प्रसार का केंद्र हैं।
16. बौद्ध विहार मानव जाति के द्वीप स्तम्भ हैं ।
17. बौद्ध विहार ग्राम स्तर पर एक विद्यापीठ हैं।
18. बौद्ध विहार ज्ञानवादी मानव निर्माण करने का केंद्र हैं।
19. बौद्ध विहार बहुजन हिताय बहुजन सुखाय इतिहास को जीवित रखने का केंद्र हैं।
20. बौद्ध विहार परिवर्तनवादी विचार को उच्च देने वाला केंद्र हैं।
21. बौद्ध विहार केवल पूजा प्रार्थना के केंद्र न होकर बल्कि समाज प्रबोधन का केंद्र हैं ।
22. बौद्ध विहार मनुष्य को सन्मार्ग पर ले जाने वाले में प्रज्ञावत का केंद्र हैं।
23. बौद्ध विहार वसुधैव कुटुंबकम भावना को जागृत करने का केंद्र हैं।
24. बौद्ध विहार नैतिक मूल्यों की आधार शीला हैं। मानव मूल्यों की संरक्षिका के रूप में हैं।
25. बौद्ध विहार भिक्षु संघ (भिक्षु निवास) के केंद्र हैं।

26. बौद्ध विहार भारतीयता संस्कार और शिक्षा प्रशिक्षण के केंद्र हैं।
27. बौद्ध विहार कला स्थापत्य के केन्द्र के साथ-साथ आज पर्यटन के केन्द्र के रूप में भी जाने जाते है। जहा हजारों की सख्या में भ्रमणकारी आते हैं।
28. बौद्ध विहारों में आर्यसत्य, अष्ठागिक मार्ग, पारमितायें, ब्रहमविहार आदि का ज्ञान अभ्यास धम्मदेशना के माध्यम से उपासक उपासिकाओं को कराया जाता है।
29. बौद्ध विहार में कोई भी व्यक्ति तथागत गौतम बुद्ध के उपदेश ग्रहण करने के लिए आ सकता है यह पूर्णत जातिविहीन वर्गविहीन, भेद-भाव से दूर, समता भाव से समाहित, लोगों को मनुष्यता के लिए, उनके कल्याण के लिए, ये बौद्ध विहार केन्द्र बनाये गये हैं।
30. बौद्ध विहार में प्रज्ञा शील, नैमित्य, ज्ञान, वीर्य, शान्ति, सत्य, अधिष्ठान, मैत्री, करुणा, उपेक्षा, इंद्रिय, निग्रह, ब्रह्मचर्य, इससे अज्ञान रूपी अंधेरा नष्ट हो जाता है।
31. बौद्ध विहार चरित्र निर्माण के केंद्र हैं, नैतिक मूल्यों, मानव मूल्यों का साकार रूप यहाँ सभी पाते, अपनाते हैं ।

बौद्ध विहारों का ऐतिहासिक संदर्भ

बौद्ध विहारों का इतिहास बहुत पुराना है। इनका आरंभ भगवान बुद्ध के समय से हुआ जब उन्होंने गृहस्थ जीवन से दूर होकर तपस्वी जीवन की ओर कदम बढ़ाए थे। बौद्ध विहारों का निर्माण मुख्य रूप से साधना, ध्यान और बौद्ध धर्म के उपदेशों के प्रचार के लिए किया गया था। प्रारंभ में ये विहार छोटे, साधारण कक्षों के रूप में होते थे, जिनका उद्देश्य साधुओं और भिक्षुओं को ध्यान और साधना करने के लिए एक शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करना था। समय के साथ-साथ बौद्ध विहारों का विस्तार हुआ और वे धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक केंद्र बन गए।

बौद्ध विहारों का निर्माण बौद्ध धर्म के धार्मिक सिद्धांतों को फैलाने के उद्देश्य से हुआ था। इन विहारों में भगवान बुद्ध के उपदेशों की व्याख्या की जाती थी, जहां लोग ध्यान, उपदेश, और सामूहिक साधना में भाग लेते थे। इन विहारों ने भारतीय समाज में न केवल धार्मिक जागरूकता बढ़ाई, बल्कि मानवता और नैतिकता के उच्चतम आदर्शों को भी प्रचारित किया। भगवान बुद्ध ने यह उपदेश दिया था कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर आध्यात्मिकता का स्थान है और उसे ध्यान, साधना, और मानसिक शांति के माध्यम से आत्मज्ञान की प्राप्ति करनी चाहिए। बौद्ध विहारों में यह संदेश विस्तारित हुआ, जिससे समाज में आत्मा की शुद्धि और मानसिक शांति के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त हुआ।

बौद्ध विहारों का धार्मिक महत्व

बौद्ध विहारों का धार्मिक महत्व अत्यधिक गहरा है। ये स्थल केवल ध्यान और साधना के केंद्र नहीं थे, बल्कि ये बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को जीवित रखने और फैलाने के भी केंद्र थे। भगवान बुद्ध ने अपने उपदेशों में जीवन के दुखों को समझने और उनसे मुक्ति पाने का रास्ता दिखाया। बौद्ध धर्म के अनुसार, दुख का कारण मानव की इच्छाएँ और आसक्ति हैं, और मुक्ति का रास्ता साधना, ध्यान और आत्मज्ञान में है। बौद्ध विहारों का निर्माण इस मार्ग को अपनाने के लिए किया गया था।

बौद्ध विहारों में साधक न केवल अपने व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रयास करते थे, बल्कि इन विहारों ने समुदाय को भी सामाजिक और नैतिक शिक्षा दी। बौद्ध धर्म ने इस विचार को बढ़ावा दिया कि हर व्यक्ति समान है और किसी भी प्रकार के भेदभाव का समर्थन नहीं किया जाता। इसके परिणामस्वरूप, बौद्ध विहारों ने समाज में समानता, अहिंसा और करुणा के सिद्धांतों को फैलाया, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक बने ।

बौद्ध विहारों में मानव मूल्य निर्माण

© 2025, IRJEdT Volume: 07 Issue: 01 | Jan-2025

बौद्ध विहारों ने समाज में कई मानवीय मूल्यों के निर्माण में योगदान दिया। इनमें से कुछ प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं:

1.अहिंसा और करुणा:

भगवान बुद्ध ने अहिंसा और करुणा को अपने उपदेशों का केंद्रीय विषय बनाया। उन्होंने यह सिखाया कि न केवल शारीरिक हिंसा, बल्कि मानसिक और वाचिक हिंसा भी गलत है। बौद्ध विहारों में इस सिद्धांत का प्रचार किया गया, जिससे समाज में अहिंसा और करुणा की भावना बढ़ी। यह शांति और सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था। इसके परिणामस्वरूप, बौद्ध विहारों ने समाज में हिंसा के खिलाफ आवाज उठाई और शांति की आवश्यकता को महसूस किया।

2.समता और समानता:

बौद्ध धर्म ने समाज में व्याप्त जातिवाद, वर्ग भेद, और अन्य प्रकार के भेदभाव को समाप्त करने के लिए काम किया। भगवान बुद्ध ने अपने उपदेशों में यह बताया कि सभी व्यक्ति समान हैं, और उन्हें समान अवसर मिलना चाहिए। बौद्ध विहारों ने इस सिद्धांत का पालन किया और समाज में समता और समानता की भावना को बढ़ावा दिया। यह सिद्धांत भारतीय समाज में जातिवाद और भेदभाव के खिलाफ एक महत्वपूर्ण कदम था।

3.ध्यान और आत्मज्ञान:

बौद्ध विहारों का मुख्य उद्देश्य साधना और ध्यान था। ध्यान के माध्यम से साधक अपने मानसिक विकारों को दूर करते थे और आत्मज्ञान की प्राप्ति की ओर बढ़ते थे। यह साधना व्यक्ति के भीतर शांति और संतुलन का निर्माण करती थी, जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक होती थी। आत्मज्ञान

और मानसिक शांति के माध्यम से व्यक्ति अपने आसपास के समाज में शांति और सद्भाव फैलाने में सक्षम होता था।

4.सामाजिक दायित्व और सेवा:

बौद्ध विहारों में सेवा और परोपकार का महत्वपूर्ण स्थान था। बौद्ध साधु समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से मिलते थे, उन्हें शिक्षा देते थे और उनकी मदद करते थे। इस प्रक्रिया के द्वारा न केवल साधक, बल्कि समाज के अन्य लोग भी अपने दायित्वों और जिम्मेदारियों को समझते थे। इसने समाज में सहयोग और सामूहिक भावना का विकास किया, जिससे सामाजिक ताना-बाना मजबूत हुआ।

बौद्ध विहारों का आधुनिक समाज में प्रभाव

आजकल के तनावपूर्ण और हिंसक समाज में बौद्ध विहारों का महत्व और भी बढ़ गया है। आज के समाज में हिंसा, असहिष्णुता और नफरत के कारण बढ़ती हुई मानसिक समस्याएँ और तनाव लोगों को परेशान कर रहे हैं। ऐसे समय में बौद्ध विहारों में मिलने वाली शांति, ध्यान और मानसिक संतुलन की शिक्षा अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हो रही है। बौद्ध विहारों में सिखाए जाने वाले सिद्धांत—जैसे अहिंसा, करुणा, समानता, और प्रेम—आज के समाज में अमूल्य हैं। यह सिद्धांत समाज के भीतर शांति, सामंजस्य और सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक हैं।

आज के बौद्ध विहार समाज के सुधारक केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं, जहां लोग मानसिक शांति और आत्म-समझ प्राप्त करते हैं। इन विहारों में साधकों और अन्य व्यक्तियों को समाज में योगदान करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह सकारात्मक सोच और मानवता के सिद्धांतों को फैलाने में मदद करता है।

निष्कर्ष

बौद्ध विहारों ने मानव मूल्य निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन स्थलों ने समाज में अहिंसा, करुणा, समानता, और शांति के मूल्यों का प्रचार किया। इसके अलावा, बौद्ध विहारों ने सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक सुधारों के माध्यम से भारतीय समाज को एक नई दिशा दी। आज भी बौद्ध विहारों का योगदान समाज में मानसिक शांति और सामूहिक सद्भावना के रूप में देखा जा सकता है। इन विहारों ने न केवल धार्मिक जीवन के उच्चतम आदर्शों की शिक्षा दी, बल्कि मानवता, प्रेम, और सहिष्णुता के मूल्यों को बढ़ावा दिया, जो आज भी समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर बने हुए हैं। भविष्य में भी बौद्ध विहारों की यह भूमिका समाज के सकारात्मक परिवर्तन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूचि –

1. डॉ. महीपाल सिंह महीप अनुवादन वर्ष 2003, सम्यक प्रकाशन पश्चिमीपुरी, नई दिल्ली-63
2. डॉ. लाल सिंह, वर्ष 2001 मेरी चीन यात्रा राहुल प्रकाशन 50 सैक्टर-16९, फरीदाबाद 121002
3. डॉ० मालती साखरे डी० लिट० वर्ष 2002, प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय आलोक प्रकाशन सन्मती प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर
4. डॉ० मालती साखरे डी० लिट० वर्ष 2022 प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय, आलोक प्रकाशन सन्मती प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर
5. पंडित राहुल सांकृत्यायन, वर्ष 2008, विनय पिटक सम्यक प्रकाशन पश्चिमपुरी नई दिल्ली-110063
6. डॉ० नारायण सिंह, बौद्ध वर्ष 2016 धम्म सन्देश भारतीय बौद्ध महासभा उत्तर प्रदेश (पंजी) बी०डी०बी०आर०ए० खुर्जा-203131, बुलन्दशहर
7. कामेश्वर प्रसाद पासवान वर्ष 2022. बौद्ध तीर्थ स्थलों का प्रमाणिक इतिहास, सम्यक प्रकाशन पश्चिमपुरी, नई दिल्ली-110063
8. बापट पी० वी० बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार (पटियाला हाउस नई दिल्ली-11001 वर्ष-1956)

9. पिपलायन मधुकर वर्ष 2003, महान सम्राट अशोक, सम्यक प्रकाशन, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली-110063
10. पिपलायन मधुकर वर्ष 2003, महान सम्राट अशोक, सम्यक प्रकाशन, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली-110063
11. जी०के० कानेकर वर्ष 2011, देश-विदेश में बौद्ध विहार, बहुजन साहित्य प्रसार केन्द्र नागपुर